रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग डी.के.कॉलेज
डुमरांव, बक्सर, बिहार

ध्वनियों का वर्गीकरण -

मनुष्य के कंठ में अनन्त ध्वनियों के उत्पादन की क्षमता है। इसका पता तो बोलते समय चलता ही है, लेकिन उससे भी अधिक गाने के समय चलता है। ध्वनियों की कितनी सूक्ष्म, कितनी मोहक और कितनी विविध भंगिमाएँ हो सकती हैं, इसका ज्ञान संगीत से होता है। यहाँ सांगीतिक ध्वनियों का विवेचन इष्ट नहीं है। हमें केवल उन ध्वनियों पर विचार करना है जो भाषिक दृष्टि से उपयोगी हैं।

ध्वनियों के वर्गीकरण के तीन प्रमुख आधार हैं- 1 स्थान, 2. करण और 3. प्रयत्न। स्थान, करण और प्रयत्न के आपेक्षिक महत्व को समझने के लिए कुछ उदाहरण लिए जा सकते हैं। क और प का अन्तर स्थानकृत है, किन्तु क और ख का अन्तर प्रयत्नकृत, क्योंकि क और ख का स्थान एक ही है - कंठ। एक ही स्थान से उच्चरित होने पर क ख में, ख ग में ग घ में अन्तर हो जाता है। यह अन्तर प्रयत्न के कारण है। किन्तु क च ट त प का अन्तर प्रयत्न के कारण नहीं, स्थान के कारण है- ये ध्वनियाँ विभिन्न स्थानों से उच्चरित होती हैं। करण का अर्थ है इन्द्रिय। जिस तरह एक ही स्थान या प्रयत्न से सभी

ध्वनियों का उच्चारण नहीं होता, उसी तरह करण भी एक नहीं रहता। स्थान और करण का भेद यह है कि स्थान अचल है, किन्तु करण चल है। उदाहरणार्थ तालु को स्थान कहेंगे किन्तु जिह्वा को करण, क्योंकि जिह्वा की गतिशीलता से अनेक स्थानों का स्पर्श होता है और अनेक प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

स्थान :-

निःश्वास वायु को जहाँ अवरुद्ध या बाधित करते हैं उसे स्थान कहते हैं। ओष्ठ से लेकर कंठच्छद तक अनेक स्थान हैं। इनका परिचय दोनों तरह से प्राप्त कर सकते हैं - बाहर से भीतर की ओर जाकर या भीतर से बाहर की ओर आकर। निम्नलिखित स्थान उच्चारण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं—

(1) काकल (2) कंठ (3) तालु (4) मूर्धा (5) वर्त्स (6) दन्त (7) ओष्ठ। इन स्थानों से उच्चरित ध्वनियाँ क्रमशः (1) काकल्य (2) कंठ्य (3) तालव्य (4) मूर्धन्य (5) वर्त्स्य (6) दन्त्य और (7) ओष्ठ्य कहलाती हैं।

(1) काकल्य - ध्वनि में मुखविवर खुला रहता है और निःश्वास बन्द कंठद्वार को वेग से खोलकर बाहर निकलता है।

(2) कंठ्य - ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग कोमल तालु को स्पर्श करता है।

3. तालव्य – ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वाग्र कठोर तालु का स्पर्श करता है।

4- मूर्धन्य - ध्वनियों के उच्चारण में जिह्व की नोक प्रायः उलटकर मूर्धा का स्पर्श करती है। मूर्धन्य ध्वनियों के लिए जिह्व का उलटना अनिवार्य नहीं है, जिह्व की नोक से सीधे भी मूर्धा का स्पर्श करने से मूर्धन्य ध्वनियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(5) वर्त्स्य - ध्वनियों के उच्चारण में जिह्व की नोक दन्त - पंक्तियों के उपरिभाग का स्पर्श करती है।

(6) दन्त्य - ध्वनियों के उच्चारण में जिह्व की नोक ऊपर की दन्त – पंक्तियों का स्पर्श करती है।

(7) ओष्ठ्य - ध्वनियों के दो भेद हो जाते हैं (क) दन्त्योष्ठ्य और (ख) द्व्योष्ठ्य।

(क) दन्त्योष्ठ्य - जब नीचे का ओष्ठ ऊपर की दन्त-पंक्तियों को छूता है तो जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं वे दन्त्योष्ठ्य कहलाती हैं।

(ख) द्व्योष्ठ्य - जब दोनों ओष्ठ एक-दूसरे का स्पर्श करते हैं तो द्व्योष्ठ्य ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग डी.के. कॉलेज
डुमराँव बक्सर बिहार